

Padma Shri



PROF. RAGHUVENDRA TANWAR

Prof. Raghuvendra Tanwar is Professor Emeritus, Kurukshetra University and Chairman of the Indian Council of Historical Research (ICHR), New Delhi. He is widely known for his study of the partition of India, mainly the Punjab and Jammu & Kashmir. He is reputed for his honest, unbiased and meticulous attention to historical detail.

2. Born on 20th February, 1955 in Village Lukhi, Kurukshetra, Haryana, Prof. Tanwar, chartered a brilliant academic career with two Gold Medals for standing First Class First in M.A. History and for securing the highest percentage of marks in the Social Science Faculty of Kurukshetra University in 1977. From August 1977, he served the university with distinction for over 38 years. In recognition of his distinguished service and exceptional contribution as a teacher he was conferred the title of Professor Emeritus. He served as Director of the Haryana Academy of History and Culture from July, 2016 to December, 2021.

3. Prof. Tanwar has to his credit a long list of publications but it was his study of the partition of Punjab that first recorded the unfolding of the tragic story on a day-to-day basis. The volume titled 'Reporting the Partition of Punjab: Press Public & Other Opinions 1947', (2006) received world-wide acclaim. Partition, the study noted was a flawed concept that overlooked the evolution of India through the ages and ended a centuries old way of life based on coexistence. The volume remains an important point of reference. In 2021, he contributed a second study of India's partition titled 'The Story of India's Partition', the volume has about 240 rare photographs and illustrations. Published in English and Hindi, it is a sensitive and shocking revisit of the tragic times.

4. Prof. Tanwar's study of Jammu & Kashmir (2019) like his study of Punjab's partition has filled critical gaps and soundly questioned several falsely propagated story lines on Jammu & Kashmir. This study is titled 'Be Clear Kashmir Will Vote for India: Jammu & Kashmir 1947-1953 -Reporting the Contemporary Understanding of the Unreported'. Published in India and the United Kingdom the central point this volume makes is that there were little voices of ordinary Kashmiris in 1947 and the following years that should have been heard but were swept away by opinions that were more assertive, even if misleading and misrepresentative. Based almost completely on hitherto unpublished sources, this volume also draws attention to thousands of years of the region's historical and cultural legacy. As Director of the Haryana Academy of History & Culture, he edited and published a five-volume study of the speeches and writings of Punjab's legendary peasant leader Sir Chhotu Ram and a two-volume collection of writings and speeches of Dr. Mangal Sein, the popular leader of the Punjab and Haryana.

5. Prof. Tanwar has been a National Fellow of the UGC (Research Awardee, 2002-2005) an awardee of the UGC Major Research Project (2013-2015) and an awardee of the Foreign Travel Research Fellowship of the Indian Council of Historical Research. His contribution to the field of history has been widely acknowledged. He was President of the Modern Section of the Punjab History Conference (2001) and General President of the Punjab History Conference (2017). In 2008, he was President of the Contemporary Section of the Indian History Congress. He has through his career been associated with several educational institutions including universities, colleges and schools in different capacities.

पद्म श्री



प्रो. रघुवेन्द्र तंवर

प्रो. रघुवेन्द्र तंवर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एमेरिटस हैं और भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर), नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं। वे भारत के विभाजन, मुख्य रूप से पंजाब और जम्मू और कश्मीर के अपने अध्ययन के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। वे ऐतिहासिक विवरण के सम्बन्ध में अपनी निष्ठा, निष्पक्ष और गहन अध्ययन के लिए प्रतिष्ठित हैं।

2. 20 फरवरी, 1955 को ग्राम लुखी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में जन्मे, प्रो. तंवर ने एमए इतिहास में प्रथम श्रेणी में प्रथम आने और 1977 में सामाजिक विज्ञान संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में उच्चतम प्रतिशत अंक हासिल करते हुए दो स्वर्ण पदक प्राप्त किये। अगस्त 1977 से, उन्होंने 38 वर्षों से अधिक समय तक विश्वविद्यालय की सेवा की। एक शिक्षक के रूप में उनकी विशिष्ट सेवा और असाधारण योगदान के लिए उन्हें प्रोफेसर एमेरिटस की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने जुलाई, 2016 से दिसंबर, 2021 तक हरियाणा इतिहास और संस्कृति अकादमी के निदेशक के रूप में कार्य किया।

3. प्रो. तंवर के पास प्रकाशनों की एक लंबी सूची है, लेकिन पंजाब के विभाजन के उनके अध्ययन ने दैनिक जीवन की दुखद कहानी को सबसे पहले उद्घाटित किया। 'रिपोर्टिंग द पार्टिशन ऑफ पंजाब: प्रेस पब्लिक एंड अदर ओपिनियन्स 1947' (2006) शीर्षक वाली पुस्तक को दुनिया भर में प्रशंसा मिली। इस पुस्तक के अध्ययन में कहा गया है कि विभाजन एक त्रुटिपूर्ण अवधारणा थी जिसने युगों पहले से भारत की अवधारणा की अनदेखी की और सह-अस्तित्व के आधार पर सदियों पुरानी जीवन शैली का अंत कर दिया। यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु के रूप में स्थापित है। वर्ष 2021 में, उन्होंने 'भारत के विभाजन की कहानी' शीर्षक से भारत के विभाजन के दूसरे अध्ययन के रूप में योगदान किया है और इस पुस्तक में लगभग 240 दुर्लभ तस्वीरें और रेखाचित्र हैं। अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित, यह पुस्तक दुखद समय का एक संवेदनशील और चौंकाने वाला पुनरीक्षण दस्तावेज है।

4. प्रो. तंवर के जम्मू और कश्मीर (2019) के अध्ययन ने पंजाब के विभाजन के उनके अध्ययन की तरह ही महत्वपूर्ण खाई को पाट दिया है और जम्मू और कश्मीर पर कई गलत तरीके से प्रचारित कहानी पर प्रश्न उठाए हैं। इस अध्ययन का शीर्षक है 'बी किलयर कश्मीर विल वोट फॉर इंडिया: जम्मू एंड कश्मीर 1947-1953-रिपोर्टिंग द कंटेम्परेरी अंडरस्टैंडिंग ऑफ द अनरिपोर्टेड'। भारत और यूनाइटेड किंगडम में प्रकाशित इस पुस्तक का केंद्र बिन्दु यह है कि 1947 और उसके बाद के वर्षों में सामान्य कश्मीरियों की ओर से बहुत कम आवाजें उठती थीं किन्तु उन्हें सुना जाना चाहिए था, लेकिन जो आवाजें अधिक मुखर थीं उनके विचारों ने इन्हें अलग थलग कर दिया, चाहे वे विचार भ्रामक और गलत तरीके से क्यों न प्रस्तुत किए गए हों। लगभग पूरी तरह से अब तक अप्रकाशित स्रोतों पर आधारित, यह पुस्तक इस भूभाग की हजारों वर्षों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। हरियाणा इतिहास और संस्कृति अकादमी के निदेशक के रूप में, उन्होंने पंजाब के महान किसान नेता सर छोटू राम के भाषणों और लेखन के पांच-खंडों के अध्ययन और पंजाब और हरियाणा के लोकप्रिय नेता डॉ मंगल सेन के लेखन और भाषणों के दो-खंड के संग्रह को संपादित और प्रकाशित किया।

5. प्रो. तंवर यूजीसी के नेशनल फेलो (रिसर्च अवार्ड, 2002-2005) यूजीसी मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट (2013-2015) के अवार्ड और इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च के फॉरेन ट्रेवल रिसर्च फेलोशिप के अवार्ड रहे हैं। इतिहास के क्षेत्र में उनके योगदान को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। वे पंजाब इतिहास सम्मेलन (2001) के आधुनिक खंड के अध्यक्ष और पंजाब इतिहास सम्मेलन (2017) के सामान्य अध्यक्ष थे। वर्ष 2008 में वे भारतीय इतिहास कांग्रेस के समकालीन खंड के अध्यक्ष थे। वह अपने शैक्षणिक जीवन में विभिन्न पदों पर रहते हुए विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों सहित कई शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े रहे हैं।